इकाई 11 दक्खन

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमको एक विशेष क्षेत्र दक्खन में राजनीतिक सत्ता की प्रकृति, संगठन एवं वितरण की जानकारी प्राप्त होगी। इस इकाई का अध्ययन करने पर आपको :

- दक्खन के भौगोलिक फैलाव की जानकारी होगी,
- उन छोटी-बड़ी राजनीतिक शक्तियों का बोध हो जाएगा जिनका सन् 800 ई. से 1300 ई. तक दक्खन के विभिन्न क्षेत्रों पर अधिकार था,
- स्थानीय शक्तियों के निर्माण और स्थानीय अनुबंधों के बाहर राजनीतिक ढांचे के अंतर्गत उनके एकीकरण की राजनीतिक प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त होगी,
- सत्ता के विशिष्ट वितरण की पूर्णता के साथ जानकारी प्राप्त होगी, और
- दक्खन के प्रारंभिक मध्यकालीन राजनीतिक संगठन की प्रकृति का भी ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

11.1 प्रस्तावना

यदि हम सामान्य राजनीतिक घटनाक्रम के रूझान को ध्यान में रखें—विशेषकर पश्चिम तथा मध्य भारत की राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति को (इकाई 10) तब इस संदर्भ में वर्तमान इकाई पूरक अंग है। इस इकाई के प्रारंभ में मौर्य काल में राज्य समाज की ऐतिहासिक उत्पत्ति का वर्णन तथा तत्पश्चात प्रारंभिक मध्यकाल में दक्खन की राजनीतिक व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को रेखांकित किया गया है। इस इकाई के अंतर्गत राज्यों के उदय में राजवंश एवं भूमि संबंधी अधिकारों जैसे कारकों की सक्रिय भूमिका को दर्शाने का प्रयास किया गया है। राजनीतिक शक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक आधारों की भी विवेचना की गई है। अंत में इस इकाई में सत्ता के विभिन्न स्तरों के एकीकरण की प्रकृति पर भी प्रकाश डाला गया है।

11.2 क्षेत्र का निर्धारण

दक्खन शब्द संस्कृत भाषा के "दक्षिण" से लिया गया है जिसका अर्थ है दक्षिण। दक्षिण क्षेत्र की निश्चित सीमाओं के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाणों से भिन्न जानकारी प्राप्त होती है। कभी इसको संपूर्ण भारतीय प्रायद्वीप के समतुल्य माना गया और कभी इसके एक भाग के बराबर। संकुचित रूप में दक्खन का सीमांकन मराठी भाषी क्षेत्र और उससे जुड़े आस-पास के क्षेत्र के साथ किया जाता है लेकिन व्यापक रूप में दक्खन शब्द का प्रयोग भारत के उस संपूर्ण

क्षेत्र के लिए किया जा सकता है जो नर्मदा के दक्षिण में स्थित है। सामान्यतः दक्खन के अंतर्गत जो समुचित क्षेत्र आता है उसमें दक्षिण के तमिल एवं मालाबार के दूरस्थ क्षेत्र शामिल नहीं हैं। दक्षिणी भारत दक्खन के पठार (कृष्णा, तुंगभद्रा नदियाँ दक्षिणी भारत को पठार से अलग करती हैं) से भिन्न होते हुए भी विशिष्ट स्थान है। अतः सीमित अर्थों में दक्खन शब्द उस संपूर्ण क्षेत्र को इंगित करता है जिसके अंतर्गत तेलगू भाषी क्षेत्र, महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक (कन्नड़ भाषी क्षेत्र) का कुछ भाग शामिल है।

11.3 राजनीतिक सत्ता का निर्माण : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

दक्खन उन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से था जहाँ राज्य समाज का प्रसार मौर्य काल में (तीसरी सदी ई. पू.) ही हो गया था। मौर्यों के क्षेत्रीय प्रसार का परिणाम सत्ता के समतल विस्तार के रूप में हुआ। मौर्यों के दक्खन नियंत्रण की प्रकृति निरीक्षणात्मक थी जिसे वे राज्यपालों तथा प्रांतीय मुख्यालयों में नियुक्त नौकरशाही के माध्यम से नियंत्रित करते थे। प्रांतीय मुख्यालयों की स्थापना और सहायक के रूप में स्थानीय सरदारों की संबद्धता के कारण दक्खन से मौर्यों के प्रभुत्व की समाप्ति के बाद एक स्थानीय शासक वर्ग के उद्भव का मार्ग प्रशस्त हुआ। स्थानीय प्रबुद्ध समूहों ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया, राजसत्ता पर अधिकार कर शासक वंशों की स्थापना की। यह प्रक्रिया सातवाहन काल में विशेष रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने एक ऐसी शासकीय व्यवस्था को विकसित किया जिसके अंतर्गत राजकीय कार्यों को उन स्थानीय सरदारों को सौंप दिया गया जिन्होंने उन प्रदेशों को विजित किया। इस प्रकार उन्हें शक्ति संरचना में एकीकृत किया गया। सात वाहन शासन काल में जो प्रशासनिक इकाइयाँ स्थानीय सरदारों के वंशों के अधीन थी। सातवाहन काल के बाद ये स्थानीय सरदार राजनीतिक सत्ता के केन्द्रों के रूप में विकसित हो गये।

इस संपूर्ण राजनीतिक तंत्र का आधार रिश्तेदारी थी। इस राजनीतिक तंत्र की विशेषता यह थी कि यह उन सहायक उप-कबीलाई परिवारों के गठबंधनों द्वारा नियंत्रित था जिनका प्रभुत्व भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर था। एक स्थायी शासक वर्ग की स्थापना उस समय हुई जब उपाधियाँ पैतृक हो गई, और इस काल में शासक वर्ग के एकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो गई। सौभाग्यवश भारत में सातवाहनों ने हमारे लिए भूमि अनुदानों के प्राचीनतम अभिलेखीय, प्रमाणों को छोड़ दिया। इस विशेषता के विषय में आप (इकाई 1.7 और 8.3.1) पहले ही पढ़ चुके हैं। इसने न केवल सामाजिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं को अपितु राजनीतिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया। समय के प्रवाह में इन सभी परिवर्तनों की अंतिम परिणति दक्खन में राज्य के वास्तविक निर्माण के रूप में हुई।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उन पर सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह लगाओः

   i) दक्खन की पहचान केवल मराठी भाषी क्षेत्र से की जाती है।

   ii) राजनीतिक ढांचें की वास्तविक प्रकृति की पहचान केवल सामाजिक-आर्थिक समूहों की संपूर्णता और उनके संसाधनों की गतिविशालता के द्वारा ही संभव है।

   iii) आठवीं सदी ई. के अंत तक दक्खन राज्य समाजों के तंत्र से बाहर था।

   iv) सात वाहनों ने अपनी प्रशासनिक इकाइयों को जिन सहायक अधिकारियों के निरीक्षण के अधीन रखा था वे स्थानीय संपन्न वर्गों से जुड़े थे और बाद में उनका विकास सत्ता के केन्द्रों के रूप में हुआ।

2) उन तीन भाषायी क्षेत्रों को परिभाषित कीजिए जिनसे दक्खन का निर्माण हुआ।

   i) ....

   ....

   ....

   ii) ....

   ....

   ....

   iii) ....

   ....

   ....

3) उत्तर-मौर्य-काल में दक्खन में उदित होने वाले शासक वर्गों पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

11.4 शासक परिवारों का उद्भव एवं प्रसार

राज्य का निर्माण दक्खन के एक बड़े भू-भाग में आठवीं सदी ई. से काफी पहले हो चुका था। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सत्ता के केन्द्रों में कोई बदलाव एवं शासक वंशों के उद्भव, के प्रतिमान में कोई परिवर्तन नहीं हुए। नये शासक वंशों का उदय एक अनवरत प्रक्रिया थी।

भारत में अन्य स्थानों की तरह सातवीं सदी ई. से दक्खन के अभिलेख शासक वंशों की वंशावली पर स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। सन् 800 ई. से 1200 ई. तक जारी किये गये अभिलेख राष्ट्रकूट, चालुक्य, सिलहर, काकतीय, सेवूनाज (यादव) होयुसल आदि जैसी छोटी-बड़ी राजनीतिक शक्तियों के उदय पर प्रकाश डालते हैं।

दक्खन में इस काल में न केवल नवीन शासक वंशों का उदय हुआ अपितु विद्यमान शासक वंशों की शाखाओं का प्रसार भी हुआ। जैसे कि चालुक्यों की मुख्य शाखा बदामी में शासन करती थी लेकिन चालुक्यों की उपशाखाएं लता, वेंगी और एक शाखा वामूलवाद में भी थी। ऐसी भी सूचना प्राप्त हुई हैं कि कर्नाटक के अनेक स्थानीय व्यक्तिगत सदस्यों ने अपना संबंध चालुक्य वंश या कुल से जोड़ने का दावा किया। इसी प्रकार देवगिरि के मुख्य यादव (सेवूना) वंश के अतिरिक्त मुंसावदी नामक क्षेत्रीय मंडल पर एक अन्य छोटे यादव वंश का शासन था। हमें ऐसे कई अन्य शासक वंशों की शाखाओं का उल्लेख प्राप्त हुआ है जो एक विशेष शाखा के नाम से भिन्न भिन्न स्थानीय क्षेत्रों में शासन करते थे। मोरत तथा अरालू के हैहय, करादिकल, नुरूमबद, गोआ, हंगल, बनवास और बंदालिके के कदमबास गंगा और नोलंबों ने बहुत सी कनिष्ठ शाखाओं को निकट किया। मुख्य शाखाओं के लुप्त होने के बाद भी शासक वंशों की ये उप-शाखाएं सदियों तक निरंतर शासन करती रहीं। इस संदर्भ में चालुक्यों की बेंइगी शाखा को उद्धृत किया जा सकता है। इसकी स्थापना बादामी के चालुक्य नरेश पुलकेशिन ने की थी। गंगा, कदमबास और दूसरे राजवंशों की उपशाखाएं भी काफी लंबे समय तक शासन करतीं रहीं यद्यपि उनकी मुख्य शाखाएं राजनीतिक परिदृश्य से बहुत पहले ही लुप्त हो गई थीं।

11.4.1 राजवंश एवं उनके क्षेत्र

राजवंशों का स्तर, शक्ति एवं क्षेत्रीय विस्तार एक समान नहीं थे। कभी-कभी वंश एवं क्षेत्र का संबंध उस क्षेत्र के नामं के रूप में अभिव्यक्त हुआ जिसमें उस वंश का प्रभुत्व था जैसे गंगावादी, नोलम्बावदी आदि। राजवंश की शक्ति का केन्द्र बिन्दु एक छोटा क्षेत्र भी हो सकता था। 140 मसावदी के यादव 140 अरालू के हडय 300 अपने स्थानीय क्षेत्रों गाँवों में जैसा कि उनके नामों के आगे उपयोग होने वाले प्रत्यय से स्पष्ट है काफी शक्तिशाली थे। शासक वंशों के परिवर्तित वितरित प्रतिमानों के लिये यह आवश्यक नहीं था कि ये सब स्थिर क्षेत्रीय इकाइयों के अनुरूप ही हो। उदाहरण के लिए, कलचुरी वंश का उदय छठी सदी ई. में हुआ और उनके अधीन मालवा, गुजरात, कोंकण, महाराष्ट्र एवं विदर्भ का विशाल क्षेत्र था, लेकिन उन्होंने त्रिपुरी (जबलपुर के पास) और नर्मदा की ऊपरी तलहटी में स्थिति रतनपुर जैसे स्थानों पर भी अपने सत्ता केन्द्र स्थापित किये। उन्होंने अपनी शाखा की स्थापना सुदूर पूर्वी भारत में भी की जिसे सरयूपार के नाम से जाना जाता है। कलचुरियों की एक शाखा ने कर्नाटक में भी अपनी सत्ता स्थापित की। कर्नाटक के कलचुनिया मध्य भारत के कलचुरियों को अपना पूर्वज मानते हैं।

11.4.2 शासक वंशों के उद्भव के प्रतिमान

वंशों की सत्ता का निर्माण एवं गतिशीलता कई प्रकार से विकसित हुई। एक वंश की सत्ता को दूसरे वंश द्वारा हटाकर सरलता से कायम किया जा सकता था। चालुक्यों की वेहंगी शाखा की स्थापना उस समय हुई जब तेलगू भाषी क्षेत्र के तत्कालीन स्वामियों पर बादामी के चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने विजय प्राप्त की। दूसरे नये वंशों का प्रसार ऐसे भी हुआ जब किसी वंश की विस्थापित शाखा ने नये क्षेत्रों को आबाद किया और उस क्षेत्र के आर्थिक प्रतिमानों को परिवर्तित कर दिया। उदाहरणार्थ जिस समय प्रतिहारों और बाद में राष्ट्रकूटों ने कालिंजर पर विजय प्राप्त की उस समय कलचुरियों के कुछ सदस्य नये चारागाहों की खोज में दक्षिण की ओर विस्थापित हो गये। इनके एक भाग ने कुन्तला के जंगलों की ओर विस्थापन किया और वे महाराष्ट्र के शोलापुर जिले के मगलीवेदा क्षेत्र में बसे गये।

सामान्यतः जिस किसी शासक वंश का उदय शक्तिशाली प्रभुत्व संपन्न राजनीतिक शक्ति के रूप में हुआ उसका स्वरूप स्थानीय होते हुए भी अक्सर कृषि पर आधारित था। चालुक्य शब्द का प्रयोग एक कृषि यंत्र के लिए किया जाता है इस व्याख्या में यह सिद्ध किया जा सकता है कि चालुक्य मूलतः कृषक थे जिन्होंने बाद में शक्ति प्रयोग द्वारा एक राज्य की स्थापना की। लेकिन होयसलों जो पहाड़ी जंगलों के सरदार थे, के उदय का आधार कृषि नहीं था परन्तु उन्होंने अन्य पहाड़ी शक्तियों पर नियंत्रण रखने के साथ मैदानी क्षेत्रों की राजनीतिक परिस्थितियों का उपयोग अपने लाभ के लिए किया। यह भी सामान्यतः एक सत्य है कि प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में विशाल राज्यीय ढांचें का उत्कर्ष उन्हीं

क्षेत्रों में हुआ जो क्षेत्र केन्द्र में स्थित थे अथवा संसाधन संपन्न थे जैसे गंगा और कावेरी की घाटियाँ और कृष्णा-गोदावरी दोआब के क्षेत्र। लेकिन फिर भी संसाधनों का विस्तार आवश्यक था। इसी पृष्ठभूमि में यह महत्त्वपूर्ण है कि ओरूगलू (वारंगल) का क्षेत्र कृष्णा गोदावरी दोआब से दूर होने पर भी यह एक ऐसा आधार था जहां काकतीयों ने विशाल राज्य का निर्माण किया। काकतीयों से पूर्व इस क्षेत्र में तालाब छोटे थे, सिंचाई सुविधाएं अपर्याप्त थीं और खेती करने योग्य क्षेत्र सीमित था। बेता-द्वितीय, रुद्ध, गणपति, प्रतापरुद्र जैसे काकतीय नरेशों ने अपने राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में बहुत से तालाबों का निर्माण कराया। प्रतापरुद्र ने जंगलों को काट कर कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया जैसे रायलसीमा क्षेत्र। कृषि योग्य भूमि का विस्तार करने के लिए इसी तरह का आंदोलन दक्षिणी कर्नाटक में होयसलों के उदय के प्रारंभिक काल में भी चलाया गया।

11.4.3 वंशावली की काल्पनिक संरचना

दक्खन में जिन बहुत से शासक परिवारों ने शासन किया जैसे कल्याणी के चालुक्य, देवगिरि के यादव (सेवूनाज) और वारंगल के काकतीय, उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन का प्रारंभ राष्ट्रकूटों की सम्प्रभुता के अधीन छोटे सामन्तों के रूप में शुरू किया था। स्वयं राष्ट्रकूटों ने आठवीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध में दंतीदुर्ग के उदय से पूर्व तक मध्य भारत में सामंतों के रूप में शासन किया। राष्ट्रकूट दंतीदुर्ग एवं उसके उत्तराधिकारियों की सफलताओं के फलस्वरूप वे बरार के एक छोटे से वंश से एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में विकसित हुए। इसे एक ऐसे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है कि किस प्रकार एक छोटे से परिवार ने न केवल अपने आपको एक राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया अपितु एक बड़े राजकीय ढांचे को स्थापित करने में भी सफलता प्राप्त की। प्रारंभिक मध्य कालीन दक्खन में शासक वंशों के उदय की प्रक्रियाओं की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं यह हैं कि उन्होंने अपनी स्थानीय वंशों को मिथकीय परंपरा या अपने पूर्वजों का संबंध मिथकीय महाकाव्य के नायकों के वंश के साथ जोड़ने का प्रयास किया। राष्ट्रकूटों एवं यादवों ने स्वयं को पौराणिक नायक यदु का वंशज बताया। होयसलों ने भी मूल पुरुष यदु के माध्यम से चंद्र वंशी होने का दावा किया। उन्होंने स्वयं को यादव माना और कहा कि वे यादव राजकुमार कृष्ण की पौराणिक काल्पनिक राजधानी द्वारवती के स्वामी थे। इसी तरह से काकतीय नरेश गणपतिदेव के आध्यात्मिक गुरु, उनका संबंध सूर्यवंशी क्षत्रियों से जोड़ते हैं। काकतीय नरेश के एक अभिलेख में काकतीय वंशावली का चित्रण मनु, इक्ष्वाकु, भागीरत, रघु, दशरथ एवं राम की काल्पनिक एवं पौराणिक विवरणों से किया गया है।
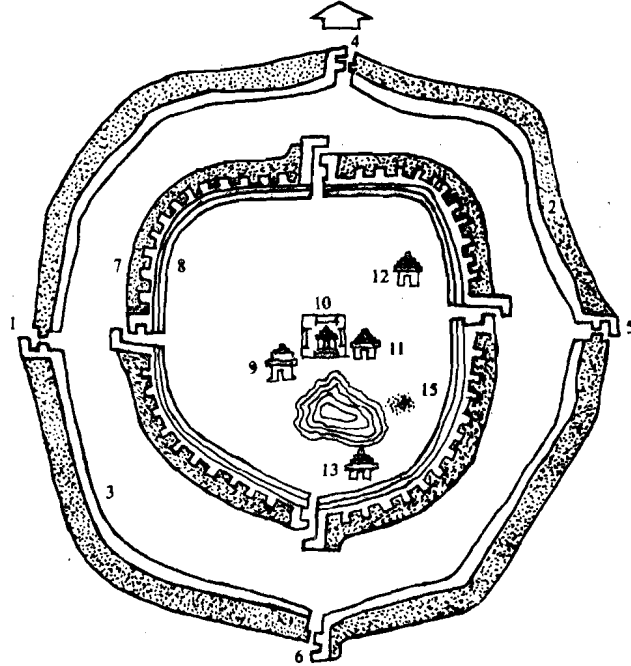
1. WESTERN GATE
2. OUTER MOAT
3. MUD FORT
4. NORTHERN GATE
5. EASTERN GATE
6. SOUTHERN GATE
7. INNER MOAT & BASTIONS
8. INNER FORT (KANCHO-KOTA)
9. SHAMBUNIGUDI
10. RUINS OF SVAYAMBHU SIVA TEMPLE AND FOUR TORNA GATES
11. VISHNU TEMPLE
12. VENKATESWARA TEMPLE
13. NELA SHAMBUNIGUDI
14. TANK
15. OMTI-KONDA (EKASILA)

2. ओरूगलू का दुर्ग

इस तरह के दावों को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया जाता है कि इनको बाद में जोड़ा गया था। यह सत्य है कि इस तरह के दावों को, जिसकी प्रेरणा मूलतः स्वच्छंद रूप से उन पौराणिक कथाओं से ली गई है जिनकी ऐतिहासिकता को सिद्ध करने के लिए किसी भी तरह के प्रमाण उपलब्ध नहीं है। लेकिन राजनीतिक प्रक्रियाओं के दृष्टिकोण से अपनी वंशावली का उद्भव सूर्य या चंद्र वंश से करना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि ये कवि अपने में वास्तविक वंशक्रम को केवल छुपाए हुए हैं वरन् प्रदर्शित करते हैं। उदाहरणार्थ—होयसल पहाड़ी सरदार थे और धीरे-धीरे उन्होंने अन्य पहाड़ी सरदारों पर नियंत्रण स्थापित किया और बाद में वे विस्थापन कर मैदानी क्षेत्रों में आ बसे तथा वहाँ अपनी सत्ता का केंद्र स्थापित किया। काकतीय शुद्र थे परन्तु उन्होंने उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर अपनी राजनीतिक सत्ता तथा निम्न उत्पत्ति को वैधता प्रदान की। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक प्रभुत्व को सामाजिक स्तर के अनुरूप जोड़ना आवश्यक था। कल्याण के चालुक्यों ने इस सामाजिक स्तर को प्राप्त करने के लिए यह दावा प्रस्तुत किया कि उनकी उत्पत्ति उस मुटठी भर पानी से हुई जिसको ऋषि भारद्वाज ने उठाया था अर्थात् द्रोण ने उठाया था अथवा द्रोण के पुत्र अश्वथामा द्वारा गंगा के जल को उनके हाथ से बहा दिए जाने पर हुई। चूँकि इस काल में क्षत्रिय स्तर शासक वर्ग की वैधता का प्रतीक था, इसी कारणवश गैर क्षत्रिय राजनीतिक शक्तियों ने अपने को इस प्रयास द्वारा वैधता प्रदान करने का प्रयत्न किया। इस समय में यदु वंश की वैधता सर्वाधिक होने से अधिकतर राज वंशों ने अपनी उत्पत्ति को यदु वंश से चित्रित करना शुरू किया।

11.5 सत्ता के प्रतीक

शाही शक्ति के वैधानीकरण की प्रक्रिया को केवल ऐसी नवोदित स्थानीय राजनीति के रूप में ही नहीं देखा जा सकता जो वैधता प्रदान करने के लिए किसी सम्माननीय वंशज के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। सत्ता की वैधता को स्थापित करने की कोशिश न केवल उन क्षेत्रों में की गई जहाँ पर राज्य समाज की ओर रूपांतरण हो रहा था बल्कि दक्खन के उन क्षेत्रों में भी यह प्रक्रिया अपनाई गई जहाँ राज्य स्थापित था। इसका अर्थ यह हुआ कि वैधता की आवश्यकता सतत थी।

सिद्धांततः राज्य की ऐहिक शक्ति से केवल सुरक्षा व्यवस्था अपेक्षित थी। **दुष्ट, निग्रह, शिष्ट, प्रतिपालन** शब्दों का प्रयोग होयसलों के दक्षिण दक्खन अभिलेखों में निरंतर हुआ है। ये शब्द राजा के दोहरे कर्तव्यों पर प्रकाश डालते हैं। प्रथम बुराई पर नियंत्रण करना एवं दूसरे, भलाई की सुरक्षा करना। राजा को संबोधित करते हुए ये शब्द उन समस्त आदेशों का सार हैं जिसकी व्यापक व्याख्या धर्मशास्त्रों में की गई है। लेकिन सुरक्षा प्रदान करने का तात्पर्य जनता को मात्र भौतिक सुरक्षा उपलब्ध कराना न था, बल्कि सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षा प्रदान करना था। वास्तव में दण्ड या शक्ति का प्रयोग पुरोहित वर्ग के द्वारा राजनीतिक साधन की अपेक्षा सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अधिक किया गया। लेकिन राज्य समाज के सपाट प्रसार के लिए विभिन्न धर्मों या मानकों के बंधन को पार करना आवश्यक था। ब्राहमणों, धार्मिक संप्रदायों के मुखियाओं, मंदिरों एवं मठों जैसी संस्थाओं, जो विभिन्न केंद्रीकृत मानकों का प्रतिनिधित्व करते थे, के क्षेत्रीय प्रसार का समर्थन प्रारंभिक मध्यकालीन राज्यों के द्वारा किया गया। इसमें शासक वर्ग के सरदारों एवं धार्मिक संस्थाओं तथा पुरोहितों के पारस्परिक हितों पर स्पष्टतः बल दिया गया था। वास्तव में पुरोहित वर्ग का स्थान न केवल प्राप्तकर्ता का था बल्कि उन्होंने शासकों के प्रभुत्व पर प्रतिबंध लगाने में भी योगदान दिया। शासक वर्ग के समर्थन का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। धार्मिक लाभ प्राप्ताओं (ब्राहमणों) की क्षेत्रीय गतिशीलता तथा राजाओं एवं कुलीनों द्वारा भूमि एवं सोने के उपहारों की दक्षिणा के रूप में उनका अत्यधिक सहयोग के रूप में किया जा सकता है। ऐसे बहुत से दृष्टांत हैं जबकि एक प्रदेश के ब्राहमण दूसरे प्रदेशों में बसने के लिए उन्मुक्त रूप से भ्रमण करते थे। आंध्र प्रदेश, पाटलिपुत्र (बिहार), पुण्ड्वर्धन (बंगाल) और कावि (गुजरात) के ब्राहमणों ने भी राष्ट्रकूट राजाओं से अनुदान प्राप्त किए। जिन ब्राहमणों ने यादव राज्य में अनुदान प्राप्त किए उनमें कई मध्य भारत एवं उत्तर प्रदेश के थे। राजा का स्वयं को किसी विशेष धर्म या संप्रदाय से जोड़ना **परम-महेश्वर, परम भागवत** जैसे नामों को धारण करना। राजनीतिक शक्ति के उत्कर्ष के लिए देवी-देवताओं के आशीर्वाद को उत्तरदायी मानना भी दक्खन में अप्रचलित नहीं था। उदाहरणार्थ—ऐसा माना जाता है कि राष्ट्रकूट वंश की सत्ता को उखाड़ फेंकने वाले तैल-द्वितीय ने ब्रहमदेव गाँव के मुखिया जगदगुरु ईश्वर घालीसासा के समर्थन से सिंहासन प्राप्त किया। काकतीय वंश के संस्थापक माधव बर्मन को देवी पद्माश्री के आशीर्वाद से हजारों हाथी, लाखों घोड़े एवं पैदल सैनिकों की सेना प्राप्त हुई। काकतीय नरेश प्रोला-प्रथम और बेता द्वितीय जैसे दक्खन के राजाओं की दानशीलता स्पष्ट है कि शेव धर्म अनुसरण कर्ताओं तक ही सीमित थी। इसके अतिरिक्त कुछ अत्याचारों के उदाहरण भी मिलते हैं।

11.6 अंतर-वंशीय तंत्र

दक्खन में प्रारंभिक मध्यकालीन राजनीतिक प्रणाली की अनिवार्य विशेषता राजनीति की अंतर संबंधतता थी। कोई भी राजनीतिक इकाई पृथक कार्य नहीं कर सकती थी। जिस समय बड़ी राजनीतिक शक्तियां उपजाऊ एवं सामाजिक महत्त्व के क्षेत्रों पर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए शक्तिशाली शत्रुओं के विरुद्ध सैनिक अभियानों का संचालन करती उस समय छोटे राज्यों के लिए तटस्थ रहना असंभव होता था अन्यथा उनके अपने अस्तित्व के लिए खतरा हो जाता

था। छोटे राज्य अपनी शक्ति एवं संसाधनों को अपने स्वामी राज्य के प्रति वास्तविक या नाममात्र की निष्ठा को प्रदर्शित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर सकते थे।

इस तरह की राजनीतिक प्रकृति में, **महामण्डलेश्वर** जैसी सहायक शक्तियों से सदैव भय बना रहता था। **राजा** (स्वामी) के विरुद्ध गठबंधन या राजा के दूसरे सहायकों की कीमत पर अपनी शक्ति में वृद्धि करने जैसे उनके रुझानों को नियंत्रित करने की आवश्यकता थी। यह एक ज्ञात तथ्य है कि कल्याणी के चालुक्य राष्ट्रकूटों के सामंत थे और उन्होंने अपनी राजनीतिक अभिलाषा की पूर्ति के लिये स्वतंत्रता की घोषणा उस समय की जब कृष्णा तृतीय के उत्तराधियों के समय में राष्ट्रकूटों की शक्ति कमजोर पड़ गई। 12वीं सदी ई. के मध्य में यादवों (सेबूनाज), होयसलों तथा काकतीयों ने चालुक्य-कलयुरी संघर्ष का उपयोग अपने हितों के लिए किया और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

इन संभावनाओं के अतिरिक्त अंतर-वंशीय संबंधों का परित्याग नहीं किया जा सका क्योंकि सैनिक आक्रमणों की स्थितियों में वे विशाल सैनिक शक्ति संचित करने में अत्यधिक सहायक होते थे। उदाहरणार्थ—दक्षिणी कर्नाटक के होयसलों ने संकट की घड़ी में अपने स्वामी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीय की सहायता की। इसी तरह का दृष्टांत गंगा शासकों का दिया जा सकता है। जिन्होंने मध्य भारत में स्थित बस्तर के किले बंद नगर चक्रकूट पर अधिकार करने में राष्ट्रकूट स्वामियों की सहायता की।

बोध प्रश्न 2

1) किन्हीं पाँच शासकों परिवारों के नामों की सूची बताइए जिनका उद्‌भव सन् 800 ई. से 1300 ई. के बीच दक्खन में हुआ?

   i) ....

   ii) ....

   iii) ....

   iv) ....

   v) ....

2) निम्नलिखित कथनों में ठीक उत्तर को चुनकर उस पर सही (√) का चिह्न लगाइए:

   i) प्रारंभिक मध्यकालीन दक्खन में शासक वंशों के उद्‌भव के प्रतिमानों से स्पष्ट है कि

      अ) राजनीतिक सत्ता को केवल क्षत्रिय ही प्राप्त कर सकते थे।

      ब) कोई वंश या उच्च जाति समूह राजनीतिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयास कर सकता था।

   ii) राज्य ने ब्राहमणों एवं धार्मिक संस्थाओं के क्षेत्रीय प्रसार को प्रोत्साहित किया क्योंकि

      अ) इसको भलाई का कार्य समझा गया।

      ब) उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के लिए खतरा प्रस्तुत किया।

      स) वे समान मानकों के कुछ प्रकारों का प्रतिनिधित्व करते थे।

      द) राज्य समाज के सपाट विस्तार के लिए राज्य समाज को विभिन्न सामाजिक मानकों के बंधन को तोड़ना पड़ा।

11.7 भूमि और सत्ता के विसर्जित केंद्रों एवं स्तरों का एकीकरण

राजनीतिक संगठनों के ढांचे के विषय में जिस महत्त्वपूर्ण पक्ष पर विचार करने की आवश्यकता है—वह है सत्ता के वितरण का विसर्जन। राजनीतिक संगठन की यह विशेषता न केवल दक्खन में विद्यमान थी बल्कि प्रारंभिक मध्य काल के सभी बड़े राजनीतिक ढाँचों में मौजूद थी।

सत्ता के इन विभिन्न विसर्जित केंद्रों एवं स्तरों का प्रतिनिधित्व सामन्तीय व्यवस्था के द्वारा किया गया। दक्खन में निम्नलिखित दो प्रकार की सामंतीय शक्तियों का उल्लेख मिलता है:

i) वे छोटे वंश जो विस्तारित होने वाले राजनीतिक संगठन के सत्ता ढाँचे के अंतर्गत एकीकृत हुए या सैन्य बल द्वारा अथवा शांतिमय साधनों द्वारा एकीकृत किए गये।

ii) कुछ ऐसे भी सामंत थे जिनको राजनीतिक शक्तियों द्वारा सैन्य सहायता के बदले भू-संपत्ति को अनुदान के रूप में प्रदान करके बनाया गया परंतु उनको **पंचमहाशब्द** (देखें इकाई 9.6) जैसे सामंतीय विशेषताधिकारों को प्रदान करके पहले किसी एक क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया। लेकिन इन पदों के वंशानुगत हो जाने से बाद में ये पद पूर्णरूपेण सामंतीय हो गए। बड़े-बड़े राज्यों की अधिकतर सामंतीय शक्तियां ऐसे ही पूर्व वंश की थी जिन को राजनीतिक ढाँचों में सम्मिलित कर लिया गया था। उदाहरणार्थ जिस समय राष्ट्रकूटों ने अपने विस्तार के अभियान को शुरू किया उस समय उनको दक्खन के प्रसिद्ध राजवंशों के प्रतिनिधियों का सामना करना पड़ा। वेंगि के

चालुक्य, वेमूलावाद के चालुक्य, और दूसरे बहुत से पृथक छोटे सरदार राष्ट्र कूटों के सामंत थे। होयसलों, यादवों तथा काकतियों के सामंतों ने नोलम्बस, गंगा, चालुक्य बदमबास अमीर, हेहय आदि जैसे प्रमुख वंश के नामों को धारण किया।

जहाँ एक ओर अर्धस्वतंत्र राज्यों के स्वामी एक सहायक सामंतीय परिवारों के मध्य अंतर-विवाहों ने सामाजिक आधार प्रदान किया वहीं दूसरी ओर स्थानीय शक्तियों द्वारा भू-संपत्तियों का भरपूर उपयोग करने के अधिकार की मान्यता प्रदान हो जाने से राजनीतिक प्रक्रिया को कड़ीबद्ध करने के लिए आर्थिक आधार की प्राप्ति भी हो गई।

शुद्ध राजनीतिक शब्दावली में उस समय शक्ति का प्रयोग करना सामान्य बात थी और ऐसा उस समय होता जबकि स्थानीय राजनीतिक शक्तियों द्वारा राजवंशीय शक्ति के प्रसार को रोकने का प्रयास किया जाता था। निशाद बोया की जाति एक सामान्य योद्धाओं की जाति थी जो नेल्लोर के आसपास के क्षेत्र में निवास करते थे। उनके सरदारों को नौकरशाही के ढांचे में सम्मिलित कर उनके क्षेत्रों को चालुक्यों ने अपने राज्य में एकीकृत कर लिया। लेकिन बॉयों ने दक्षिण में चालुक्यों की सेनाओं की प्रगति को रोकने के लिए अपने विरोध को जारी रखा। अतः चालुक्य नरेश ने पंदरंगा के अधीन बॉयों के शक्तिशाली केंद्र को समाप्त करने और उसे अपने अधीन करने के लिए दक्षिण की ओर एक सेना भेजी। इसी तरह से काकतीय नरेश रुद्र ने कोटा सरदारों को समर्पण करने के लिए बाध्य किया।

पदव्यवस्था राज सत्ता के विसर्जित केंद्रों को एकीकृत करने का दूसरा महत्त्वपूर्ण राजनीतिक तरीका था। इस व्यवस्था के अंतर्गत उपाधियाँ एवं पद, भूमिकाओं तथा सेवाओं के साथ जोड़कर प्रदान किये जाते थे। काकतीय नरेश गणपतिदेव ने रेड्डी जाति के रेचरला रुद्र को (संकट की स्थिति में काकतीय नरेश गणपतिदेव की मदद करने पर) **सिंहासन,** चौटी का जोड़ा शाही तमगों सहित **मण्डालिका** का पद प्रदान किया। सरदारों के परिवारों में पद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परिवर्तित होते रहते थे। कायस्थ सरदार काकतीयों के अधीन एक योद्धा वर्ग था जिनकी पदवी **साहिनी** (अब सेना का अधिकारी) थी। इनकी उन्नति करके काकतीय नरेश गणपतिदेव ने इनको **महामण्डेलशवर** का पद प्रदान किया। गंगेय के समय से ही ये सरदार काफी बड़े क्षेत्र नालकोडा में पानू गालू से कूटापाह जिले में वलयूरू तक के राज्यपाल हो गए। गंगेय साहिनियों द्वारा गणपतिदेव की ओर से बहुत से युद्धों में भाग लेने पर सम्मान के रूप में उन्हें यह उन्नति प्राप्त हुई थी। इस तरह जिन परिस्थितियों में जिनमें क्षत्रीय राजनीतिक नियंत्रण का आधार स्थिर नहीं रहता था उस स्थिति में पद जिनका उस तंत्र के साथ पारस्परिक संबंध था, भी स्थिर नहीं रह पाते थे।

शक्ति के विसर्जित केंद्रों का एकीकरण **नायक, सामंत, सामन्ताधिपति** या **महासामंत, मण्डलिका, महामण्डलेश्वर** आदि सामंत पदों के दिए जाने तक ही सीमित न था बल्कि उसका विस्तार नौकरशाही पदों पर एकीकरण के बहुआयामों के बावजूद भी, यह समझा जाना चाहिए कि एकीकरण यंत्र सदैव केवल एकीकरण की दिशा में ही कार्य नहीं करता था। दूसरे, चाहे एकता रही हो या विभाजन, भूमि अधिकारों में एक समान विशेषता थी। स्थानीय भू-स्वामियों या सरदारों ने उस समय की भूमिका को पूरा किया जबकि उन्हें अपने शाखाओं से प्रशासनिक एवं वित्तीय शक्तियाँ प्राप्त हुई और उन्होंने नजरानों की अदायगी की तथा उनके लिए दूसरे बहुत से अनुबंधों को भी उन्होंने पूरा किया। लेकिन वे राजा की परवाह किए बगैर उस समय वास्तविक नियंत्रणकर्त्ता एवं सर्वनाश करने वाले बन जाते थे जब किसानों एवं कारीगरों पर वे अपने-अपने क्षेत्र में स्वायत्त शक्ति के रूप में कार्य करते थे। यद्यपि स्वायत्तता की सीमा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न-भिन्न थी यदि केंद्रीय सत्ता कमजोर पड़ जाती थी और व्यावहारिक रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगते थे। ऐसी परिस्थिति में सामंत नाममात्र के राजा क्री सहायता अपनी शर्तों के आधार पर ही करने को तैयार होते थे। उत्तराधिकारी के लिए युद्ध की स्थिति में तब उनकी स्थिति और भी मजबूत हो जाती थी। ऐसी स्थिति में वे किसी एक का पक्ष लेते और अपने प्रतिनिधि को राज सिंहासन पर बैठाने का प्रयास करते। इस तरह से वे राजा बनाने का खेल भी खेलते। ऐसे अवसरों पर वे अपने राजा को सत्ता से हटाकर अपने पुराने बदले लेते और नये उत्तराधिकारी पर अपनी स्वयं की शर्तें थोप देते। राष्ट्रकूट राजा ध्रुव, अमोघवर्ष-I और अमोघवर्ष-II को सत्ता में आने में सामंतों की काफी बड़ी सहायता मिली थी।

11.8 नौकरशाही का ढाँचा

प्रारंभिक मध्यकालीन दक्खन की राजनीतिक प्रक्रियाओं की मुख्य विशेषता यह थी कि राजा सहायक के संबंधों का प्रभुत्व अन्य प्रकार के संबंधों के ऊपर था और संपूर्ण राजनीतिक तंत्र में नौकरशाही की भूमिका भिन्न-भिन्न एवं कभी-कभी बहुत सीमित भी थी।

राष्ट्रकूटों के अनुदान-पत्रों में शाही मोहर, अनुदानों के संकलनकर्त्ता और अनुदान प्राप्तकर्त्ता के नामों का वर्णन मिलता है। इन पत्रों में मंत्रियों एवं सचिवों के नाम पूर्णतः गायब हैं। राष्ट्रकूटों की राजधानी में काफी बड़ा सचिवालय विद्यमान था। इसकी पुष्टि किसी भी प्रकरण द्वारा नहीं होती क्योंकि प्रतिदिन के प्रशासनिक कार्यों को किस प्रकार राजधानी में किया जाता था इसका प्रमाण नहीं मिलता है। यद्यपि उच्च पदवी वाले अधिकारियों एवं मंत्रियों जिन्हें **आमत्य** या मंत्री के नाम से जाना जाता था की राजधानी में उपस्थिति के विषय में पता चलता है लेकिन उनके आकार, संविधान और मंत्रियों की एक स्थायी सभा के रूप में उनकी स्थिति के विषय में संतोषजनक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

राष्ट्रकूटों के प्रशासन में राजधानी एवं प्रांतीय मुख्यालयों पर राजस्व प्रमाणों भू-स्वामित्व से संबंधित दस्तावेजों और मूल भूमि अनुदान संबंधित ताम्र पंत्रों को भलीभांति सुरक्षित रखा गया।

कुछ क्षेत्रों पर राज्य के अधिकारियों द्वारा प्रत्यक्ष प्रशासन चलाया जाता था और प्रांतीय प्रशासक (**राष्ट्रपति**) को प्रांतों में अपने सहायकों सहित प्रशासन को चलाने के लिए पर्याप्त शक्तियाँ प्राप्त थी। कुछ प्रांतीय राज्यपाल शाही राजकुमार भी थे। ऐसे प्रांत जिन का प्रशासन बाद के चालुक्यों के दौरान राजकुमारों या रानियों के द्वारा चलाया गया ऐसा प्रतीत होता है कि ये प्रांत उनकी व्यक्तिगत जागीरें थे। कुछ राज्यपालों की नियुक्ति उनके द्वारा की गई उल्लेखनीय सैन्य सेवाओं के कारण की जाती थी। ऐसे छोटे अधिकारीगण जो 10 से 12 गाँवों तक की इकाइयों का निरीक्षण करते थे वे अक्सर प्रांतीय राज्यपालों के रिश्तेदार होते थे।

राष्ट्रकूट प्रशासन के अंतर्गत प्रांतीय राज्यपालों तथा जिला अधिकारियों की सहायता के लिए कुछ अन्य अधिकारी होते थे जिन्हें क्रमशः **राष्ट्र महत्तारा** एवं **विषय महात्तारा** कहा जाता था। लेकिन उनकी शक्तियों एवं सभाओं आदि के विषय में बहुत कम जानकारी प्राप्त है। उनकी शक्तियाँ उन ग्रामीण सभाओं की अपेक्षा शायद काफी कम थी जिसमें ग्रामीण संपन्न वर्ग का प्रतिनिधित्व था।

गाँव एवं मण्डल के मुखियाओं के कार्यालय की प्रकृति, उपमण्डलीय स्तर पर राजस्व एकत्रित करने में राज्य सरकार की मदद करने वाले अधिकारियों से स्पष्ट है कि उन अधिकारीगणों को सामान्यतः अपना वेतन लगान मुक्त पैतृक खेतों से प्राप्त होता था।

शक्ति विस्तार के विसर्जित केंद्रों के एकीकरण की अभिव्यक्ति स्थानीय वंशों के सदस्यों को नौकरशाही के तंत्र के अंदर समायोजित करके भी हुई। राष्ट्रकूटों के प्रशासन तंत्र में जिले एवं प्रांत के राज्यपालों और **विषयपति** जैसे छोटे अधिकारियों को सामंतीय दर्जा प्राप्त था तथा उनको सामन्तीय उपाधियों को धारण करने का अधिकार था। स्पष्ट है कि वे स्थानीय राजाओं के वंशज थे और किसी समय स्वतंत्र रहे होंगे। लेकिन बाद में बड़े राज्यों के राजाओं ने उन पर विजय प्राप्त कर ली। ऐसी स्थिति में ये लोग सरकारी अधिकारियों के रूप में कार्य करते रहे होंगे।

11.9 राज्य के संसाधनों का आधार

राज्य की आय का मुख्य स्रोत कृषि पर लगाया जाने वाला कर था। व्यक्तिगत तौर पर कृषि करने वाले लोग राज्य को भू-कर अदा करते थे और यह राजस्व का मुख्य स्रोत था। खेती करने वालों को एक और अन्य कर को देना होता था जिसे **उपकृति** कहा जाता था। **उपकृतिम** तथा **कनिका** ऐसे परम्परागत कर प्रतीत होते हैं जिन्हें सरकार द्वारा राजाओं एवं अधिकारियों की सेवाओं के बदले में ग्रामीणों तथा नगरवासियों पर लगाया जाता था।

भूमि कर की अदायगी नगद या वस्तु दोनों के रूप में की जाती थी। काकतीय राज्य में लगान की अदायगी सामान्यतः अनाज में, वर्ष में दो किस्तों में, कार्तिक एवं बैशाख में दो मुख्य फसलों के आगमन के समय की जाती थी। राष्ट्रकूटों के अधीन कृषक लगान की अदायगी तीन किश्तों में भाद्रपत, कार्तिक और माघ में करते थे। राज्य के अधिकारी गण उनके अनाज से राजा का हिस्सा एकत्रित करने के लिए गाँव-गाँव जाते थे। गृहपति की आमदनी में राज्य के भाग को भी वस्तु के रूप में एकत्रित किया जाता था।

भूमि को शुष्क, नम एवं बागान भूमि में भूमि की प्रकृति एवं उर्वरकता के आधार पर विभाजित किया जाता था। राज्य की आमदनी का एक भाग चरागाहों तथा जंगलों के उन भागों से आता था जिन पर राज्य के द्वारा स्वामित्व का दावा प्रस्तुत किया जाता था। राज्य में खानों, गुप्त खजानों, बंजर भूमि, राजकीय फलों के बागानों, झीलों एवं सार्वजनिक कुँओं में भी राज्य का स्वामित्व था।

राज्य की आय के अन्य महत्त्वपूर्ण स्रोत व्यापार एवं उद्योग पर लगाए जाने वाली चुंगी, आबकारी कर एवं अन्य प्रकार के कर थे। **सुनकामु** या **सुनका** शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में व्यापारीगण्णों द्वारा नगर को लाने तथा ले जाने वाले आयात-निर्यात माल पर लगाया जाता था। चुंगी एवं आबकारी करों के लिए कंपनी तथा एकत्रित करने के अधिकार को व्यापारिक संगठनों को दे दिया गया था जिसे एक निश्चित रकम के बदले दिया (बेचा) जाता था। सामंतीय सरदारों द्वारा राजाओं को लगातार दिए जाने वाले उपहार एवं नजरानें भी राज्य की आय के अन्य स्रोत थे। एक राष्ट्रकूट अभिलेख में एक ऐसे अवसर का उल्लेख हुआ है जबकि राजा गोविन्द III ने सामंतों द्वारा अदा न किए गए नजरानों को एकत्रित करने के लिए अपने साम्राज्य के दक्षिणी भाग का दौरा किया। शाही राजधानी में आयोजित होने वाले समारोहों के अवसरों पर भी सामंत सरदारों विशेष उपहारों को वसूल किया जाता था।

राज्य के द्वारा किए गए खर्च का विवरण स्पष्ट नहीं है। सार्वजनिक कार्यों के लिए किसी विभाग या ऐसे अधिकारी का कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं होता जो सिंचाई एवं अन्य लोक हित के कार्यों को करता था। स्पष्टतः राज्य का सिंचाई कार्यों के निर्माण तथा रख-रखाव का कोई प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व नहीं था। यद्यपि कुछ होयसल एवं काकतीय राजाओं ने सिंचाई योजनाओं का निर्माण करने में व्यक्तिगत रुचि दिखाई। यह विश्वास कि तालाब का निर्माण करना भलाई का कार्य था, राजाओं, सरदारों, कुलीनों, अधिकारियों, धार्मिक नेताओं, व्यापारियों तथा धनी लोगों ने तालाब निर्माण संबंधी कार्य किए। ऐसा प्रतीत होता है कि राज्य अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सेवाओं के बदले वेतन का

नकद भुगतान नहीं करता था क्योंकि उस समय संपूर्ण दक्खन में भूमि अनुदानों की संख्या में वृद्धि हुई है। सैन्य संगठन में भी भर्ती द्वारा राज्य के वेतनभोगी सैनिकों की संख्या का एक भाग ही प्रत्यक्ष था। सेना का बड़ा भाग प्रांतीय राज्यपालों तथा सामंतों द्वारा प्रदान किया जाता था।

11.10 दक्खन की राजनीति में राजनैतिक अस्थिरता

प्रारंभिक मध्यकाल की राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति में अस्थिरता उत्पन्न हो गई थी। राजनीतिक शक्तियों की क्षेत्रीय सीमाओं में जल्दी-जल्दी होने वाले परिवर्तन स्वयं इस ओर संकेत करते हैं (विभिन्न कालों में यादवों के क्षेत्रीय फैलाव को नक्शे में देखें)। राज्यों की राजनीति अपने मुख्य क्षेत्रों में भी स्थिर न थी। सैनिक शक्ति के बल पर स्थापित शासकों को हटाया जा सकता था और शक्ति के नए केन्द्रों एवं राजनीतिक संबंधों के नवीन तंत्र का निर्माण किया जा सकता था। शक्ति के विभिन्न केन्द्र बिन्दुओं के साथ राज्य के विकेंद्रीकृत चरित्र के विषय में हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं। सत्ता के विसर्जित केन्द्रों को परिवर्तित राजभक्तियाँ, अर्थात जो सहायक सरदारों या सामंतों का प्रतिनिधित्व करती थीं, राजनीतिक अस्थिरता में वृद्धि करने में सहायक होती थीं। सैन्य सेवा करने वाले अधिकारियों सहित विभिन्न वर्गों के अधिकारियों को आवंटित की जाने वाले भू-अनुदान पुरोहितों की विभिन्न श्रेणियों को लगान-मुक्त गांवों का अनुदान, भिन्न-भिन्न प्रबुद्ध वर्गों के द्वारा किए जाने वाले भूमि अनुदानों में होती वृद्धि ने सम्बद्ध क्षेत्रीय इकाइयों के राजस्व संसाधनों पर राज्य के नियंत्रण को कमज़ोर किया। भू-स्वामियों एवं कुलीन सामंतों की राजभक्ति के संतुलन में होने वाले परिवर्तन ने भी राजनीतिक संगठन पर राज्य के नियंत्रण को कमज़ोर किया। ये कमज़ोरियां बाहरी खतरों के समय और भी गहरा जाती थीं और यहां तक कि लम्बे समय से चले आ रहे राज्यों के विघटन में भी सहायक होती थीं। इस संदर्भ में शक्तिशाली राष्ट्रकूट राज्य के नाटकीय पतन को उद्धृत किया जा सकता है। सन् 967 ई. में व्यावहारिक तौर पर राष्ट्रकूट कृष्णा-III के अधीन नर्मदा नदी के दक्षिण के संपूर्ण भू-भाग के स्वामी थे। लेकिन केवल छह वर्ष के बाद सन् 973 ई. में चालुक्यों के सामंत तैल द्वारा कृष्ण-III के भतीजे करक्का को सिंहासन से हटाकर राष्ट्रकूटों साम्राज्य का पतन हो गया तथा यह एक स्मृति मात्र बनकर रह गया।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित कथनों में कौन-सा कथन ठीक या गलत है। उस पर (√) या (×) का चिन्ह लगाइए:
   i) सत्ता का अंतरीय वितरण केवल दक्खन का एक विशेष गुण था।
   ii) पदों की व्यवस्था सत्ता के विसर्जित स्तरों के एकीकरण का महत्त्वपूर्ण राजनीतिक यंत्र थी।
   iii) दक्खन की प्रारंभिक मध्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था में सभी सामंतीय शक्तियों को एक समान आंतरिक स्वायत्ता प्राप्त थी।

2) "अ" भाग में कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों के नाम और "ब" में उनके सामंतों के नाम उद्धृत किए गए हैं। "अ" को "ब" के साथ समरूप कीजिए:

अ	ब
1) राष्ट्रकूट	1) मोरत तथा अरालू के हेहय
2) काकतीय	2) वेलानादू
3) वेंगी के चालुक्य	3) कोंकण के सिलहार
4) यादव (सेवूनाज)	4) कोटा के सरदार

3) राज्य समाज में सत्ता के विसर्जित केन्द्रों की एकीकरण के बारे में 10 पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

4) राज्य की आय के मुख्य स्रोतों की सूची बनाइए।

1) ....

2) ....

3) ....

4) ....
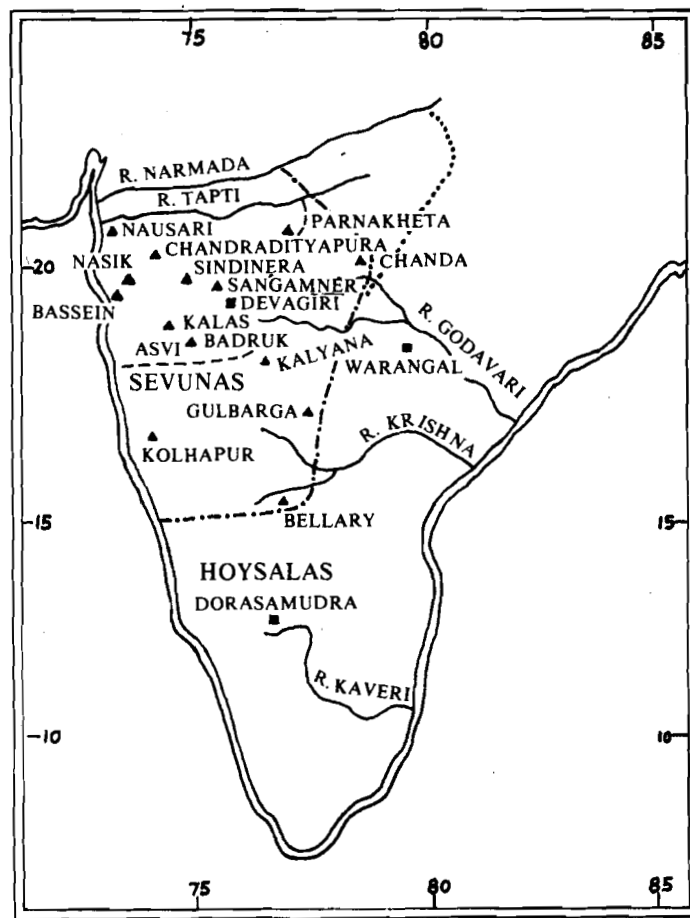
मानचित्र-3 सेवुनाज राज्य का विस्तार

11.11 सारांश

उपरोक्त प्रारंभिक मध्यकालीन महाराष्ट्र, आन्ध्र और उत्तरी कर्नाटक वे राजनीतिक ढांचे से स्पष्ट है कि :

- वे स्थानीय सरदार जो दक्खन में मौर्यों की राजनीतिक प्रणाली में एकीकृत हो गए थे, उनका उद्भव शासक वर्गों के रूप में हुआ और उन्होंने दक्खन में राजतंत्रीय विचारधारा एवं राजनीतिक संगठन को लागू किया,
- नए राजवंशों एवं सत्ता के केन्द्रों का निर्माण एक अनवरत प्रक्रिया थी,
- मूलतः गैर-क्षत्रिए सामाजिक समूहों का उदय एवं विकास पहले ही विद्यमान वंशों के एकीकरण के द्वारा बड़ी राजनीतिक शक्तियों के रूप में निरंतर जारी था। इन विद्यमान वंशों ने सत्ता के विसर्जित केन्द्रों का प्रतिनिधित्व किया और नवोदित राजीनितिक ढांचे के महत्त्वपूर्ण अंग बन गए,
- राजा सहायक के संबंध राजनीतिक ढांचे में विद्यमान दूसरे संबंधों से प्रधान हो गए, सत्ता के एक वैधानिकरण ने जहां एक ओर स्वयं को क्षत्रिय मूल का घोषित किया वहीं दूसरी ओर प्रारंभिक मध्यकालीन राजवंशों ने ब्राह्मणों और धार्मिक संस्थाओं के क्षेत्रीय प्रसार को प्रोत्साहित किया जिससे कि वे विभिन्न मानकों के लिए केन्द्र बिन्दु उपलब्ध करा सकें,
- भूमि अधिकार अंतर-वंशीय तंत्र की व्याख्या करते हैं,
- राज्य संसाधनों का आधार कृषि का अतिरिक्त उत्पादन था, जिसने समाज में एकीकरण को प्रोत्साहित किया,
- राज्य का हस्तक्षेप व्यापार एवं विनिमय के बढ़ते हुए तंत्र में भी हो गया और व्यापार के कारण राज्य के साधनों में काफी प्रसार हुआ एवं विविधता आई।

11.12 शब्दावली

दण्ड : शक्ति।

पणनिमस : मूल पुरुष।

कनिका : राजाओं एवं अधिकारियों के द्वारा की गई सेवाओं के बदले ग्रामीणों और नगरवासियों द्वारा दिया जाने वाला कर।

पंचमहाशब्द : एक सामंतीय विशेषाधिकार।

परमभगवत : विष्णु तथा उससे संबंधित देवी-देवताओं का भक्त।

परममहेश्वर : शिव का भक्त।

राष्ट्रमत्तारा : प्रांत का अधिकारी।

साहिन्दी : अश्व सेना का अधिकारी।

सुंकामू/सुंका : चुंगी एवं आबकारी कर।

उपकति : देखें कनिका।

11.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) × ii) √ iii) × iv) √
2) देखें भाग 11.2
3) देखें भाग 11.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 11.4
2) i) ब ii) द

बोध प्रश्न 3

1) i) × ii) √ iii) ×
2) अ) iii) ब) iv) स) ii) द) i)
3) देखें भाग 11.7
4) देखें भाग 11.9

INDIA : II
c.A.D. 700–1000
1 The Deccan
2 South India